गणेश चतुर्थी पर धारण करें गणेश रुद्राक्ष

गणेश चतुर्थी- 22 अगस्त 2020

वर्तमान युग में व्यक्ति की सफलता अध्ययनकाल में उसके प्रदर्शन पर आधारित मानी जा सकती है। व्यक्ति का अध्ययन काल में जैसा प्रदर्शन रहा है, जीवन में वैसी ही सफलता उसे प्राप्त होती है। अच्छे प्रदर्शन के आधार पर व्यक्ति IIT, AIEEE, CPMT, CAT, GATE, MET, ICS, PCS इत्यादि परीक्षाओं में सफल होकर उच्च स्तर के कॅरियर प्राप्त करता है और फलतः उसका जीवन स्तर स्वतः ही उच्च हो जाता है। समाज में ऐसे व्यक्तियों की गणना उच्च स्तर के व्यक्तियों में की जाती है, क्योंकि उनके पास अच्छा कॅरियर, आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पर्याप्त धन, सुख-सुविधापूर्ण आधुनिक घर, अच्छा वाहन, समाज में सम्मान इत्यादि सफलता के लगभग सभी पहलु उसकी पहुँच में होते हैं।

सफलता का आधार जब अध्ययन काल में प्रदर्शन है, तब अध्ययन के प्रति सावचेत रहना प्रत्येक विद्यार्थी का ही कर्त्तव्य नहीं है, वरन् प्रत्येक माता-पिता का भी यह कर्त्तव्य है कि वे अपने बच्चों का भविष्य बनाने के लिये उनके अध्ययनकाल के दौरान उन्हें आवश्यक सुविधाएँ एवं वातावरण उपलब्ध करवाएँ।

विद्यार्थीकाल में व्यक्ति कुछ ऐसी भूलें कर बैठता है, जिसके कारण उसे जीवनभर पछताना पड़ता है। अध्ययन के प्रति गंभीर न होना, लेखनकला का विकसित न होना, स्मरण शक्ति का क्षीण होना, कुसंगति, गलत आदतों में पड़ जाना इत्यादि वे कारण हैं, जिनकी वजह से व्यक्ति का प्रदर्शन अध्ययनकाल में श्रेष्ठ नहीं रह पाता है।

आधुनिक युग अत्यधिक प्रतिस्पर्धा का भी है। अच्छे विद्यालयों, उत्कृष्ट कोचिंग सेन्टरों, अच्छे नोट्स आदि की उपलब्धता एवं अन्य भौतिक सुविधाओं की उपलब्धता के कारण विद्यार्थियों में पूर्वोक्त परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने के लिए अत्यधिक प्रतिस्पर्धा भी है। एक-एक अंक पर योग्यता सूची में अनेक प्रतिस्पर्धी होते हैं, फलतः कुछ-एक अंकों से योग्य विद्यार्थी भी प्रतिस्पर्धा में सफलता पाने से वंचित रह जाते हैं। कहने का अर्थ है कि आजकल भाग्य या ईश्वर कृपा भी सफलता के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

उपर्युक्त दोनों कारणों अर्थात् योग्यता एवं प्रतिभा होने पर भी एकाग्रता एवं स्मरण शक्ति का अभाव, कुसंगति आदि कारणों से, लापरवाही के कारण आदि से अध्ययन में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाना, दूसरी ओर भाग्य के सम्यक् रुप से साथ न देने के कारण प्रतिस्पर्धा में सफलता से वंचित रहना, को काफी हद तक दूर करने का एक उपाय है 'गणेश रुद्राक्ष'।

गणेश रुद्राक्ष अध्ययनकाल में अच्छे प्रदर्शन के लिए जाना जाता है। यह रुद्राक्ष अध्ययन के प्रति एकाग्रता में वृद्धि करने, स्मरण शक्ति बढ़ाने, लेखन-कौशल की संवृद्धि, बुद्धि के देवता भगवान गणेश की कृपा की प्राप्ति और अध्ययन एवं लेखन के कारक बुध ग्रह की अनुकूलता के लिए जाना जाता है।

गणेश रुद्राक्ष ऐसे विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है, जिनकी बुद्धि कुशाग्र है, किन्तु जिनका अध्ययन में मन नहीं लगता है। फलतः वे परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन कर पाने में असमर्थ होते हैं। ऐसे विद्यार्थी अध्ययन के स्थान पर खेलने, टी. वी. देखने, कॉमिक्स पढ़ने, दोस्तों के साथ घूमने आदि में अपना समय बर्बाद कर देते हैं, जब परीक्षाएँ सिर पर आती हैं, तब कुछेक दिन पढ़कर परीक्षा देने की खानापूर्ति कर देते हैं। कुशाग्र बुद्धि होने के कारण उन्हें अल्प परिश्रम से ही अधिक अंक परीक्षा में तो प्राप्त हो जाते हैं, किन्तु आधुनिक प्रतिस्पर्धा को देखते हुए ये अंक पर्याप्त नहीं होते हैं, फलतः उन्हें उच्च पढ़ाई के लिए अच्छे कॉलेज या स्कूल में दाखिला नहीं मिलता है और मेडिकल, इंजीनियरिंग, प्रशासनिक, प्रबंधन, एकाउंटिग आदि की उच्चस्तरीय परीक्षाओं में सफलता प्राप्त नहीं होती है। ऐसे जातक अपनी कुशाग्र बुद्धि का लाभ नहीं उठा पाते हैं। यदि ऐसे जातक गणेश रुद्राक्ष धारण करें और गणपति की आराधना करें, तो भगवान् गणेश की कृपा से उनका अध्ययन में मन लगने लगेगा और वे अध्ययन के प्रति गंभीर हो जाएँगे। इन सबके परिणामस्वरुप उन्हें परीक्षाओं में परिश्रम एवं कुशाग्र बुद्धि के संयोग से आश्यचर्यजनक सफलता प्राप्त होगी।

विद्यार्थियों की एक बड़ी समस्या याद किए हुए को भूल जाना होता है। परीक्षा से निकलते हुए ऐसे अनेक परीक्षार्थी कहते हुए मिल जाते हैं कि कल ही तो इस प्रश्न का उत्तर याद किया था, किन्तु परीक्षा में वह याद नहीं आया। कई परीक्षार्थी यह कहते हुए मिल जाते हैं कि इस प्रश्न का उत्तर परीक्षा भवन में तो याद नहीं आया, किन्तु बाहर आते ही याद आ गया। ऐसे विद्यार्थियों के लिए भी भगवान् गणपति की आराधना के साथ-साथ गणेश रुद्राक्ष धारण करना लाभदायक होता है।

परीक्षाओं में अधिक सफलता प्राप्ति के लिए लेखन-कौशल भी महती भूमिका निभाता है। समान रुप से तैयारी करने वाले दो परीक्षार्थियों में से उसी परीक्षार्थी को अधिक अंक प्राप्त होते हैं, जिसका लेखन-कौशल अपेक्षाकृत रुप से अधिक अच्छा होता है। आपने देखा होगा कि कई परीक्षार्थी ऐसे होते हैं, जिन्हें तथ्यात्मक जानकारी, विद्वानों के उद्धरण और पूछ गए प्रश्न के समस्त पहलू अपेक्षाकृत रुप से कम ज्ञात होते हैं, किन्तु वे उन विद्यार्थियों से अधिक अंक प्राप्त कर लेते हैं, जिन्हें उक्त समस्त के बारे में अधिक जानकारी होती है। यह सब लेखन-कौशल का ही खेल है। धार्मिक दृष्टि से लेखन-कौशल के देवता भगवान् गणेश और ज्योतिष की दृष्टि से लेखन का कारक ग्रह बुध होता है। दोनों ही अर्थात् भगवान गणेश और बुध ग्रह की अनुकूलता के लिए गणेश रुद्राक्ष धारण किया जाता है। इस प्रकार गणेश रुद्राक्ष लेखन-कौशल को भी बढ़ाता है।

गणेश रुद्राक्ष ऐसे विद्यार्थियों के लिए भी उपयोगी है, जिनकी बुद्धि कुशाग्र नहीं है। भगवान गणेश को बुद्धिदाता माना गया है। ऐसे गणेश की कृपा प्राप्त करने के लिए गणेश रुद्राक्ष और उनकी आराधना पर्याप्त उपाय है।

भगवान गणेश को विघ्नकर्त्ता और विघ्नहर्त्ता दोनों ही कहा गया है। जिस पर कृपा बनाते हैं, उसके सभी विघ्नों को हरने के कारण इन्हें विघ्नहर्त्ता कहा गया है और जिस पर रुष्ट होते हैं, उसके कार्यों में अनेक विघ्न उत्पन्न करने के कारण इन्हें विघ्नकर्त्ता कहा गया है। यही कारण है कि इन्हें प्रत्येक शुभ कार्य में प्रथम स्मरणीय एवं प्रथम पूजनीय देवता माना जाता है। अध्ययन में विघ्न न पड़ें और अध्ययन सुचारु रुप से चलता रहे, इसके लिए गणेश कृपा की आवश्यकता होती है और इस आवश्यकता की पूर्ति करता है 'गणेश रुद्राक्ष'।

इस वर्ष 22 अगस्त को भगवान् गणेश का महोत्सव गणेश चतुर्थी पड़ रही है। गणेश कृपा की प्राप्ति के रुद्राक्ष 'गणेश रुद्राक्ष' को धारण करने का इससे बड़ा और श्रेष्ठ मुहूर्त्त क्या हो सकता है? इस मुहूर्त्त में धारण किया हुआ रुद्राक्ष 'गणेश रुद्राक्ष' शीघ्र और अधिक शुभ फलदायक होता है, अतः गणेश रुद्राक्ष को महागणपति चतुर्थी को धारण करना चाहिए।

गणेश रुद्राक्ष न्यौछावर राशि- 2100/-♦♦♦